इतिहास क्यों पढ़ें ?

पीटर एन. स्टर्न

यह लेख इतिहास शिक्षण के प्रचलित तौर-तरीकों की आलोचना करते हुए कहता है कि विभिन्न समाज ऐतिहासिक तथ्यों, सूचनाओं के दिमागहीन रटंत का इस्तेमाल छटनी के रूप में करते रहे हैं। जबकि इतिहास अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच संबंध कायम करता है। इतिहास वर्तमान को समझने में मदद करता है और भविष्य के लिए सुगम रास्ता तैयार करने में मदद कर सकता है।

लोग वर्तमान में जीते हैं। वे भविष्य की योजनाएं बनाते हैं और उसके बारे में चिन्तित रहते हैं। जबकि इतिहास अतीत के बारे में अध्ययन है। वर्तमान में जीने की तमाम जरूरतों पर पूरा ध्यान देते हुए और आने वाले समय में क्या होने वाला है, उसके बारे में कल्पनाएं करते हुए जो बीत गया है उसकी परवाह क्यों की जाए ? ज्ञान के तमाम उपलब्ध और अपेक्षित क्षेत्रों के होते हुए क्यों इतिहास पढ़ने पर इतना जोर दिया जाता है, जैसा कि अमेरिका के ज्यादातर शैक्षिक कार्यक्रम करते हैं ? और क्यों बहुत सारे शिक्षार्थियों को इतिहास पढ़ने के लिए आवश्यकता से अधिक प्रेरित किया जाता है ?

किसी भी विषय के पास अध्ययन के वाजिब कारण होने चाहिएं : उसका पक्ष लेने वालों को यह समझाना ही होता है कि उस पर क्यों ध्यान दिया जाना चाहिए। व्यापक रूप में स्वीकृत विषय- और निश्चय ही इतिहास उनमें से एक है- कुछ उन लोगों को आकर्षित करता है जिन्हें सामान्यतः सूचना और उस तरह से सोचने के तरीकों में दिलचस्पी होती है। लेकिन ऐसे लोग जिनका विषय के प्रति उतना स्वाभाविक झुकाव नहीं होता है और जिनके मन में इसको लेकर कई तरह के संशय होते हैं कि इसे पढ़ने की जहमत क्यों उठाई जाए, उन्हें यह जानने की जरूरत होती है कि इसे पढ़ने का उद्देश्य क्या है।

इतिहासकार हृदय प्रत्यारोपण, राजमार्गों के स्वरूप में सुधार या अपराधियों को गिरफ्तार करने का काम नहीं करते। एक समाज में जहां शिक्षा से कुछ उपयोगी उद्देश्यों की पूर्ति की अपेक्षा की जाती है वहां इतिहास शिक्षण के उद्देश्यों को व्याख्यायित करना चिकित्सा या इंजीनियरिंग के मुकाबले काफी कठिन है। वास्तव में इतिहास बहुत उपयोगी ही नहीं अपरिहार्य विषय है, लेकिन इतिहास की उत्पादकता उतनी साफ नजर नहीं आती और अन्य विषयों की तरह उसके परिणाम उतने त्वरित भी नहीं होते।

पूर्व में इतिहास अध्ययन के लिए जो कारण बताए जाते थे, वे आज स्वीकार्य नहीं हैं। उदाहरण के लिए, वर्तमान शिक्षा में इतिहास की मौजूदगी का एक कारण यह है कि पूर्ववर्ती नेता यह मानते थे कि कुछ खास ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में जानकारी शिक्षित व्यक्तियों को अशिक्षितों से अलग करती है; ऐसा व्यक्ति जो इंग्लैण्ड पर नॉरमन विजय (1066) की तारीखों का विवरण दे सके या डार्विन के समकालीन उस व्यक्ति (वालेस) का नाम बता सके जिसने विकास का सिद्धांत दिया था- ऐसे व्यक्ति को विधि विद्यालय या व्यवसाय में तरक्की के लिए ज्यादा बेहतर उम्मीदवार माना जाता था। चीन से लेकर अमेरिका तक अनेक समाजों में ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी को छंटनी के लिए एक उपकरण की तरह काम में लिया जाता था और यह आदत कुछ हद तक आज भी बनी हुई है। यह विडंबना ही है कि यह उपयोग दिमागहीन रटंत को बढ़ावा देती है। अनुशासन का यह एक वास्तविक लेकिन कम प्रभावित करने वाला पहलू है।

इतिहास पढ़ा जाना चाहिए क्योंकि यह व्यक्तियों और समाज के लिए अपरिहार्य है और क्योंकि यह सुंदरता को संरक्षित करता है। विषय के वास्तविक कार्य पर

लेखक परिचय : जॉर्ज मेनसन विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर।

प्रकाशन : 'थिंकिंग हिस्ट्री'

चर्चा करने के अनेक तरीके हो सकते हैं- ठीक वैसे ही जैसे कि अनेक ऐतिहासिक प्रतिभाएं हैं और ऐतिहासिक व्याख्या के अनेक मार्ग हैं। हालांकि इतिहास की उपयोगिता की सभी परिभाषाएं दो बातों पर निर्भर करती हैं।

इतिहास हमें लोगों और समाज को समझने में मदद करता है

सबसे पहले तो, इतिहास हमारे लिए मनुष्य और समाज कैसे रहते और व्यवहार करते थे ऐसी सूचनाओं के भंडार की तरह काम करता है। मनुष्य और समाज के कार्य व्यापार को समझना एक दुरूह कार्य है, यद्यपि अनेक अनुशासन इसके लिए प्रयास करते हैं। सिर्फ वर्तमान आंकड़ों पर निर्भरता हमारे प्रयास को बेवजह ही पंगु बना सकती है। यदि देश में शांति है तो हम ऐतिहासिक सामग्री का उपयोग किए बिना युद्ध का आकलन कैसे कर सकते हैं। अतीत के अनुभवों के बारे में उपलब्ध सामग्री का इस्तेमाल किए बिना हम प्रतिभा, तकनीकी नवाचारों के प्रभाव या पारिवारिक जीवन का स्वरूप निर्धारित करने वाली मान्यताओं को कैसे समझ सकते हैं ? कुछ समाज विज्ञानी मानव व्यवहारों के बारे में सिद्धांत या कानून बनाने की कोशिश करते हैं। लेकिन इस तरह के विकल्प भी ऐतिहासिक सूचनाओं पर निर्भर करते हैं, इनसे कुछ हद तक किए जाने वाले उन प्रयासों को अलग रखा जा सकता है जिनमें लोगों के व्यवहार को जानने के लिए कुछ बनावटी परिस्थितियों के साथ प्रयोग किए गए हों। समाज के व्यवहार के महत्त्वपूर्ण पहलू, जैसे आम चुनाव, मिशनरी गतिविधियां या सैन्य गठबंधन आदि को लेकर प्रयोग नहीं किए जा सकते। इसी के समानांतर कितनी ही अकुशलता से ही क्यों न हो इतिहास को हमारे लिए प्रयोगशाला के रूप में भी काम आना चाहिए और सामाजिक संरचना के भीतर मनुष्य प्रजाति जिस तरह व्यवहार करती है वह वैसा क्यों करती है, यह पता लगाने के अभियान में ऐतिहासिक आंकड़ों को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथ्यों के रूप में काम आना चाहिए। मूलतः यही वजह है कि हम इतिहास के बिना नहीं रह सकतेः क्योंकि समाज कैसे काम करता है इस पर विचार और विश्लेषण करने के लिए वही एकमात्र व्यापक प्रामाणिक आधार प्रदान करता है, और लोगों को सामान्यतः अपना जीवन जीने के लिए भी कुछ हद तक यह जानने की जरूरत होती है कि समाज कैसे काम करता है।

इतिहास हमें परिवर्तन को समझने में मदद करता है और यह भी कि हम जिस समाज में रहते हैं वह अस्तित्व में कैसे आया

गंभीर अध्ययन के लिए इतिहास एक अपरिहार्य विषय है, इसके लिए दूसरा कारण पहले कारण का बहुत निकटता से अनुसरण करता है। अतीत वर्तमान का कारण होता है और इसी तरह भविष्य का भी। कभी भी हम जब यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि कोई घटना क्यों हुई- चाहे अमेरिकी कांग्रेस में पार्टियों के वर्चस्व में आया बदलाव हो, किशोर आत्महत्या की दर में आया अहम बदलाव हो या बाल्कान या मध्य एशिया के युद्ध हों- हमें उन कारणों की ओर देखना पड़ता है जिन्होंने इसके लिए पृष्ठभूमि तैयार की। कभी-कभी तात्कालिक इतिहास भी किसी घटना के पीछे के कारणों को समझने में सहायक होता है लेकिन अक्सर हमें किसी परिवर्तन के कारणों को समझने के लिए इतिहास में काफी पीछे तक झांक कर देखना पड़ता है। हम सिर्फ इतिहास के अध्ययन की मदद से ही यह समझ सकते हैं कि बदलाव कैसे आता है; और सिर्फ इतिहास ही हमें यह भी समझने में मदद करता है कि बदलाव के बावजूद किसी समाज या संस्था के कौनसे घटक हैं जो नहीं बदले।

मानव व्यवहार में बदलाव को समझने में इतिहास की भूमिका के महत्त्व की बात कोई अमूर्त बात नहीं है। एक महत्त्वपूर्ण मानवीय प्रवृत्ति शराब पीने को ही लें। वैज्ञानिकों ने जीव वैज्ञानिक प्रयोगों के जरिए ऐसे खास जीनों का पता लगा लिया है जो कुछ व्यक्तियों में शराब के प्रति झुकाव के लिए जिम्मेदार होते हैं। यह एक उल्लेखनीय प्रगति है। लेकिन, एक सामाजिक यथार्थ के रूप में शराब पीने का एक इतिहास रहा है। शराब पीने वालों की दर घटती और बढ़ती रही है, और एक समाज से दूसरों समाजों में यह दर अलग-अलग रही है। शराब पीने के प्रवृत्ति के प्रति व्यवहार और नीतियां भी बदलती रही हैं या उनमें भिन्नता होती है। इतिहास इस तरह के बदलाव क्यों आते हैं, उन्हें समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है। और जेनेटिक प्रयोगों की तुलना में ऐतिहासिक विश्लेषण कई दृष्टियों से ज्यादा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। वास्तव में हाल के दशकों में इतिहासकारों ने शराब पीने की आदतों में आए बदलावों को समझने में और इसकी लत लग जाने से पैदा होने वाली सामाजिक समस्या से जुड़े विभिन्न पहलुओं को समझने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है।

समकालीन अमेरिकी राजनीति की एक महत्त्वपूर्ण चिन्ता प्रमुख चुनावों में भी मतदाताओं की भागीदारी कम रहने को ले कर रही है। मतदाताओं की भागीदारी में आने वाले बदलावों का ऐतिहासिक विश्लेषण, हम आज जिस समस्या से जूझ रहे हैं, उसे समझना शुरू करने में मदद कर सकता है। पहले कितने प्रतिशत मतदाताओं की भागीदारी रहती थी ? उनकी संख्या में कब से गिरावट आना शुरू हुई ? एक बार जब हमें यह पता चल जाता है कि गिरावट आना कब से शुरू हुई, तब हम यह पता लगाने की कोशिश कर सकते हैं कि उस वक्त कौन से ऐसे कारण मौजूद थे जिन्होंने इस प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया। क्या अब भी वही घटक इस प्रवृत्ति के लिए जिम्मेदार हैं या हाल के दशकों में इन घटकों के साथ कुछ और भी घटक जुड़

गए हैं। पूर्णतः समकालीन परिस्थितियों पर आधारित विश्लेषण समस्या पर कुछ रोशनी डाल सकता है, लेकिन ऐतिहासिक स्थितियों का आकलन स्पष्ट ही आधारभूत है- और ऐसे किसी भी व्यक्ति के लिए आवश्यक है जो अमेरिका के राजनीतिक स्वास्थ्य के प्रति सरोकार महसूस करता है।

इस तरह, इतिहास ही वह अकेला विषय है जो मनुष्य समाज की स्थितियों को समझने के लिए विस्तृत सामग्री उपलब्ध कराता है। यह हमारे इर्द-गिर्द घटित होने वाले बदलाव के कारणों के साथ ही साथ सामाजिक परिवर्तन की जटिल प्रक्रियाओं पर भी ध्यान केंद्रित करता है। यहां, दो आधारभूत और परस्पर संबद्ध कारण हैं जिनके चलते अनेक लोग अतीत की जांच की ओर आकर्षित होते हैं और स्कूलों में इतिहास को एक अहम् विषय के रूप में पढ़ाए जाने को प्रोत्साहित करते हैं।

परिवर्तन के विश्लेषण का अर्थ है कुछ हद तक परिवर्तन की तीव्रता और प्रासंगिकता में फर्क करने की क्षमता का विकास, क्योंकि कुछ बदलाव अन्यों की तुलना में ज्यादा जरूरी होते हैं। किसी एक बदलाव का अतीत के उसी तरह के अनुभव से तुलना करने से इतिहास के शिक्षार्थियों को इस क्षमता के विकास में मदद मिलती है। यहां तक कि पूरी तरह नाटकीय ढंग से होने वाले बदलावों के पीछे भी एक निरंतरता होती है और किसी भी बदलाव के संभावित करणों में फर्क कर पाने की ही तरह इसे पहचानने की क्षमता भी इतिहास के अध्ययन से आती है।

हमारे जीवन में इतिहास का महत्त्व

इतिहास अध्ययन के इन दोनों आधारभूत कारणों में हमारे अपने जीवन में इस विषय की ज्यादा विशिष्ट और विविध उपयोगिता अंतर्निहित है। इतिहास को यदि अच्छी तरह लिखा जाए तो वह सुंदर होता है। अनेक ऐसे इतिहासकार जो सामान्य पाठकों को बहुत प्रभावित करते हैं वे सटीकता के साथ ही साथ कुशल और नाटकीय लेखन के महत्त्व को भी समझते हैं। जीवनियां और सैन्य इतिहास अपने कथा तत्व के चलते लोगों को ज्यादा प्रभावित करता है। इतिहास कला और मनोरंजन के रूप में न सिर्फ सौंदर्य शास्त्र की दृष्टि से बल्कि मनुष्य की समझ के स्तर पर भी ज्यादा वास्तविक उद्देश्यों की पूर्ति करता है। ठीक तरह से लिखी गई कहानियां वे होती हैं जो इस बात को उद्घाटित कर सकें कि वास्तव में लोग और समाज कैसे काम करते थे, और जो अन्य देश काल में भी मनुष्य के अनुभवों के बारे में चिन्तन को प्रेरित कर सके। एक समान सौंदर्यशास्त्रीय और मानवीय लक्ष्य लोगों को काफी पहले के इतिहास को पुनःसृजित करने की प्रेरणा देता है, जो वर्तमान समय की उपयोगिता से बिल्कुल अलग हो सकता है। जिसे इतिहासकार कभी-कभी ''अतीत की अतीतता'' कहते हैं- बहुत पहले के समय में लोग अपना जीवन कैसे जीते थे- उसका पता लगाने में एक खास तरह का सौंदर्यबोध और उत्तेजना, और अंततः मनुष्य जीवन और समाज के बारे में दूसरी दृष्टि शामिल होती है।

इतिहास नैतिक समझ बनाने में सहायक होता है

इतिहास नैतिक दृष्टि से विचार करने का भी आधार उपलब्ध कराता है। अतीत की स्थितियों या लोगों के जीवन के बारे में कहानियां पढ़ने से इतिहास के शिक्षार्थी को अपनी नैतिक समझ को जांचने का अवसर मिलता है और विभिन्न कठिन परिस्थितियों में व्यक्तियों के सामने आने वाली वास्तविक जटिलताओं के बरक्स उनकी यह समझ को पैनी होती है। ऐसे लोग जिन्होंने सिर्फ काल्पनिक कहानियों में ही नहीं बल्कि वास्तविक ऐतिहासिक परिस्थितियों में भी तमाम प्रतिरोधों का सामना किया हो, वे प्रेरित कर सकते हैं। ''उदाहरणों के साथ इतिहास पढ़ाना'' ऐसा पक्ष है जो अतीत के इस तरह उपयोग को समझाता है- सिर्फ प्रमाणित नायकों या इतिहास के महान पुरुषों और महिलाओं ही नहीं जो नैतिक द्वंद्व से सफलता पूर्वक उबर सके बल्कि ज्यादा सामान्य लोगों का अध्ययन जो साहस, उद्यमिता और रचनात्मक प्रतिरोध का पाठ पढ़ाते हैं।

इतिहास पहचान देता है

इतिहास अस्मिता बनाने में भी सहायक होता है और निःसंदेह यह भी एक कारण है कि अधिकांश आधुनिक राष्ट्र किसी न किसी रूप में इतिहास को पढ़ाए जाने को प्रोत्साहित करते हैं। ऐतिहासिक आंकड़ों में परिवार, समूह और संस्थाएं कैसे रहती थीं, और पूरा देश कैसे बनता था, और कैसे समय के साथ उन्होंने अपने आपको बनाए रखा इसके बारे में प्रमाण शामिल होते हैं। अनेक अमेरिकी लोगों के लिए अपने परिवार का इतिहास जानना इतिहास का सर्वाधिक स्वाभाविक उपयोग है, क्योंकि यह उनके जैविक विकास के बारे में तथ्य उपलब्ध कराता है और (इससे थोड़ा और जटिल स्तर पर) यह समझने के लिए आधार उपलब्ध कराता है कि किसी परिवार ने व्यापक ऐतिहासिक परिवर्तनों के साथ अंतःक्रिया कैसे की। परिवार की पहचान स्थापित और पुख्ता होती है। अनेक संस्थाएं, व्यवसाय, समुदाय और सामाजिक इकाइयां, जैसे कि अमेरिका के जातीय समूह, इतिहास का उपयोग समान पहचान के उद्देश्यों के लिए करते हैं। सिर्फ वर्तमान के आधार पर बनने वाली पहचान समृद्ध अतीत के आधार पर बनने वाली पहचान की संभावना के आगे फीकी पड़ने लगती है। और निश्चय ही राष्ट्र इतिहास की पहचान को इस्तेमाल भी करते हैं और उसे लेकर एतराज भी जताते

हैं। इतिहास जो राष्ट्र की कहानी कहता हो, राष्ट्र के अनुभव की विविध खूबियों पर जोर देता है, उसका उद्देश्य राष्ट्रीय मूल्यों की समझ और राष्ट्र के प्रति निष्ठा को स्थापित करना होता है।

अच्छी नागरिकता के लिए इतिहास का अध्ययन आवश्यक है

अच्छी नागरिकता के लिए इतिहास का अध्ययन आवश्यक है। विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में इतिहास को स्थान दिए जाने के पक्ष में दिया जाने वाला यह सबसे ज्यादा प्रचलित तर्क है। कई बार नागरिकता के इतिहास के पक्षधर व्यक्तिगत सफलता और नैतिकता के पाठों के छौंक वाली विविध कहानियों से युक्त इतिहास के माध्यम से महज राष्ट्र की अस्मिता और राष्ट्र के प्रति वफादारी की ही उम्मीद रखते हैं। जबकि नागरिकता के लिए भी इतिहास का महत्त्व इस संकीर्ण लक्ष्य से कहीं आगे तक जाता है और कुछ हद तक इसे चुनौती भी दे सकता है।

ऐसा इतिहास जो वास्तविक नागरिकता के लिए आधार तैयार करता हो, एक मायने में, अतीत के अध्ययन के अनिवार्य उपयोग की ओर लौटता है। इतिहास राष्ट्रीय संस्थाओं, समस्याओं और मूल्यों से संबंधित आंकड़े उपलब्ध कराता है- यह ऐसे उपलब्ध आंकड़ों का एकमात्र प्रासंगिक भंडारघर है। यह जिम्मेदार नागरिकता के विकास के लिए आवश्यक अंतर्राष्ट्रीय और तुलनात्मक नजरिए उपलब्ध कराते हुए इस बात के भी प्रमाण देता है कि राष्ट्र अन्य समाजों के साथ कैसे अंतःक्रिया करता है। इसके अलावा, इतिहास का अध्ययन हमें यह समझने में भी मदद करता है कि नागरिक जीवन को प्रभावित करने वाले ऐसे बदलाव जो कुछ ही समय पूर्व घटित हुए हैं, वर्तमान में हो रहे हैं या निकट भविष्य में जिनके होने की संभावना है वे कैसे होते हैं या हो सकते हैं और उनके पीछे क्या कारण हो सकते हैं। इतना ही नहीं, इतिहास का अध्ययन सोचने की ऐसी आदतों को प्रोत्साहित करता है जो किसी देश या समुदाय के नेता, जागरूक मतदाता, याचिकाकर्ता या महज पर्यवेक्षक के रूप में जिम्मेदार सार्वजनिक व्यवहार के लिए आवश्यक होते हैं।

इतिहास के शिक्षार्थी में किन क्षमताओं का विकास होता है ?

एक सुशिक्षित इतिहास का शिक्षार्थी, जिसे पूर्व की सामग्रियों पर काम करने और सामाजिक बदलाव लाने वाले विशिष्ट प्रकरणों पर काम करने का प्रशिक्षण मिला हो, वे किन चीजों को खास तरह से करना सीखते हैं ? यह सूची भले ही बहुत लंबी न हो लेकिन इसमें कई ऐसी श्रेणियां हैं जो एक-दूसरे को ढंकती हैं।

साक्ष्यों के आकलन की क्षमता- इतिहास का अध्ययन विविध प्रकार के साक्ष्यों के उपयोग और उनके आकलन का अनुभव देता है- ऐसे साक्ष्य जिनका इस्तेमाल इतिहासकार अतीत की अधिकतम सटीक तस्वीर तैयार करने में काम में लेते हैं। पूर्व राजनेताओं के वक्तव्य- एक प्रकार के साक्ष्य हैं, जिनकी व्याख्या किस तरह की जाए यह सीखना वर्तमान समय में राजनेताओं के वक्तव्यों को सुन कर वास्तविक उद्देश्यों और उनके निहित स्वार्थों के बीच फर्क करना सिखाता है। विभिन्न किस्म के साक्ष्यों- सार्वजनिक वक्तव्य, निजी रिकॉर्ड, सांख्यिकीय आंकड़ों और दृश्य सामग्रियों- के बीच सामंजस्य बनाना सीखने से विभिन्न प्रकार के आंकड़ों के आधार पर सशक्त तर्क गढ़ने की क्षमता का विकास होता है। इस क्षमता का इस्तेमाल रोजमर्रा के जीवन में सामने आने वाली सूचनाओं के साथ भी किया जा सकता है।

परस्पर विरोधी व्याख्याओं के आकलन की क्षमता - इतिहास सीखने का अर्थ विविध, अक्सर परस्पर विरोधी व्याख्याओं को अलग करने की क्षमता को अर्जित करना भी है। ऐतिहासिक अध्ययन के केंद्रीय लक्ष्य- समाज कैसे संचालित होता है यह समझना है। इसमें अंतर्निहित अस्पष्टता के बावजूद संभवतः इसी में वर्तमान की वास्तविकता को समझने की क्षमता भी निहित है। परस्पर विरोधी व्याख्याओं को कैसे पहचाना जाए और उनका मूल्यांकन कैसे हो यह नागरिकता के लिए अनिवार्य क्षमता है जिसके लिए इतिहास- मानव अनुभव की ऐसी प्रयोगशाला के रूप में जिसे अक्सर चुनौती मिलती रहती है- प्रशिक्षित करता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां इतिहास अध्ययन का पूरा लाभ कभी-कभी अतीत से पहचान के निर्माण जैसे संकीर्ण उपयोगों से टकराता है। पूर्व की स्थितियों को जांचने का अनुभव ऐसी रचनात्मक आलोचनापरक समझ बनाने में मदद करता है जो राष्ट्र की महानता और सामूहिक पहचान जैसे दावों को वास्तविकता से अलग करने की क्षमता प्रदान करता है। इतिहास का अध्ययन कभी भी वफादारी और प्रतिबद्धता को कमतर नहीं आंकता, लेकिन यह विचार के आकलन की जरूरत को अवश्य बताता है, और यह बहस में शामिल होने और दृष्टि को विकसित करने का अवसर भी उपलब्ध कराता है।

अतीत के परिवर्तनकारी उदाहरणों के आकलन का अनुभव - अतीत के परिवर्तनकारी उदाहरणों के आकलन का अनुभव वर्तमान समाज को समझने के लिए बहुत जरूरी है- जैसा कि हमें अक्सर बताया जाता है कि ''दुनिया परिवर्तनशील है'' ऐसे में यह एक नितांत जरूरी क्षमता है। परिवर्तन के विश्लेषण का अर्थ है कुछ हद तक परिवर्तन की तीव्रता और प्रासंगिकता में फर्क करने की क्षमता का विकास, क्योंकि कुछ बदलाव अन्यों की तुलना में ज्यादा जरूरी होते हैं। किसी एक बदलाव का अतीत के उसी तरह के अनुभव से तुलना करने से इतिहास के शिक्षार्थियों को इस क्षमता के विकास में मदद मिलती है। यहां तक कि पूरी तरह नाटकीय ढंग से होने वाले बदलावों के पीछे भी एक निरंतरता होती है और किसी भी बदलाव के संभावित करणों में फर्क कर पाने की ही तरह इसे पहचानने की

क्षमता भी इतिहास के अध्ययन से आती है। इतिहास का अध्ययन यह पता लगाने में मदद करता है कि किसी बदलाव के पीछे मुख्य कारण कोई तकनीकी नवाचार है या नीतियों में किया गया कोई अहम् बदलाव उसके लिए जिम्मेदार है, क्योंकि सामन्यतः किसी भी बदलाव के पीछे कई कारणों की सम्मिलित भूमिका होती है।

कुल मिलाकर, एक अवास्तविक से लगने वाले जीव 'जानकार नागरिक' के विकास के लिए इतिहास शिक्षण बेहद निर्णायक होता है। यह हमारी राजनीतिक व्यवस्था की पृष्ठभूमि तथा हमारे सामाजिक स्वास्थ को प्रभावित करने वाले मूल्यों और समस्याओं के बारे में आधारभूत तथ्यात्मक जानकारी उपलब्ध कराता है। यह हमारी साक्ष्यों के उपयोग, व्याख्याओं के आकलन, बदलाव और निरंतरता के विश्लेषण की क्षमताओं को बढ़ाने में मदद करता है। इतिहासकार अतीत को जिस तरह समझते हैं कोई भी उस तरह वर्तमान को नहीं समझ सकता, यह एक ऐसी उपलब्धि है जिसके लिए हमारे पास नजरिए का अभाव होता है; किंतु इतिहास के अध्ययन से जुड़ी आदतों का इस्तेमाल करते हुए हम इस दिशा में बढ़ सकते हैं और इस प्रक्रिया में हम बेहतर नागरिक बन सकेंगे।

"दिमाग की ऐतिहासिक आदतों के विकास का मूल मंत्र ऐतिहासिक छानबीन के अनुभव के दोहराव में निहित है। इस तरह के अनुभव के लिए विविध प्रकार की सामग्रियों और विश्लेषण परक समस्याओं की विविधता होनी चाहिए। इस प्रक्रिया में तथ्य महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि ऐतिहासिक विश्लेषण आंकड़ों पर निर्भर करता है, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह तथ्य स्थानीय, राष्ट्रीय या विश्व इतिहास से लिए गए हैं- हालांकि अधिकाधिक व्यवस्थाओं के बारे में पढ़ना सबसे ज्यादा उपयोगी होता है।"

कार्य जगत में इतिहास उपयोगी है

इतिहास कार्य जगत के लिए उपयोगी है। इसका अध्ययन बेहतर व्यवसायी पेशेवर और राजनेता बनाने में मदद करता है। इतिहासकारों के लिए काफी तादाद में नौकरियों की मांग गौर करने योग्य है, जबकि इतिहास पढ़ने वाले शिक्षार्थियों में से कम ही पेशेवर इतिहासकार बनते हैं। पेशेवर इतिहासकार अनेक स्तरों पर पढ़ाते हैं, संग्रहालयों और मीडिया सेंटरों पर काम करते हैं, व्यावसायिक या सार्वजनिक एजेंसियों के लिए शोध करते हैं और ऐतिहासिक सलाहकारों की बढ़ती संख्या में अपनी भागीदारी निभाते हैं। यह श्रेणियां इतिहास के आधारभूत प्रतिष्ठान को चलाए रखने के लिए महत्त्वपूर्ण ही नहीं अनिवार्य भी हैं, किंतु इतिहास पढ़ने वाले ज्यादातर लोग इस विषय का अध्ययन अन्य वृहत्तर पेशों में जाने के लिए करते हैं। इतिहास के शिक्षार्थी विविध प्रकार के पेशों में जाने के लिए अपने अनुभव को उपयुक्त पाते हैं और वे कानून या नागरिक प्रशासन जैसे विषयों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने में भी इतिहास के आधार को उपयोगी पाते हैं। नियोक्ताओं को भी खासतौर से ऐसे पेशेवर व्यक्तियों की तलाश रहती है जिनके पास ऐसी क्षमताएं हों जो इतिहास के अध्ययन से अर्जित की जाती हैं। इसके कारणों को समझना बहुत मुश्किल नहीं हैः इतिहास के शिक्षार्थी अतीत के विभिन्न दौर और अतीत के विभिन्न समाजों के बारे में पढ़ते हुए एक व्यापक नजरिया ग्रहण करते हैं जो उन्हें विभिन्न कार्य स्थितियों में काम करने के लिए अपेक्षित व्यापकता और लचीलापन प्रदान करता है। उनके पास शोध की क्षमता होती है, सूचनाओं के स्रोतों का पता लगाने और उनका आकलन करने की क्षमता होती है, और विविध व्याख्याओं को पहचानने और उनका मूल्यांकन करने के तौर-तरीके वे जानते हैं। इतिहास पर काम करते हुए लिखने और बोलने की आधारभूत क्षमताओं का विकास होता है और यह प्रत्यक्षतः अनेक सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में विश्लेषण परक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जरूरी है, जहां पहचान, आकलन और प्रवृत्तियों को समझाने की क्षमता आवश्यक होती है। इतिहास का अध्ययन भले ही अन्य अनेक तकनीकी विषयों की तरह ज्यादातर शिक्षार्थियों के लिए किसी खास नौकरी का रास्ता न बताता हो, लेकिन इसका अध्ययन निश्चय ही विविध कार्यों, पेशेवर स्थितियों के लिए एक निधि की तरह है। लेकिन नौकरी में शुरुआत की तुलना में आगे के समय में सामंजस्य बनाने में सहायक और विकास की विशेषताओं के चलते इतिहास शिक्षार्थियों को उनकी नौकरियों में लंबे ठहराव के लिए आधार प्रदान करता है। इस बात से कोई इन्कार नहीं है कि हमारे समाज में इतिहास की ओर प्रवृत्त होने वाले अनेक लोगों के सामने उसकी प्रासंगिकता का प्रश्न मौजूद रहता है। हमारी परिवर्तनशील अर्थव्यवस्था के चलते अधिकांश क्षेत्रों में नौकरियों के भविष्य को लेकर भी चिन्ता बनी रहती है। इतिहास का प्रशिक्षण सिर्फ आनंद की प्राप्ति के लिए नहीं लिया जाता है, यह कई तरह के कैरियर के लिए विकल्प प्रदान करता है और हमारे कामकाजी जीवन में मदद करता है।

हम किस तरह का इतिहास पढ़ें

हमें क्यों इतिहास पढ़ना चहिए, इस प्रश्न में निहित है कि हमें कैसा इतिहास पढ़ना चाहिए। इतिहासकार और जन सामान्य पाठ्यक्रम के किस भाग में किस तरह के इतिहास के कोर्स को शामिल किया जाना चाहिए, इस विषय पर काफी उत्तेजना पैदा कर सकते हैं। इतिहास के कई लाभ अलग-अलग प्रकार के इतिहास, स्थानीय या राष्ट्रीय या किसी एक संस्कृति पर केंद्रित या विश्व इतिहास आदि,

से प्राप्त होते हैं। इतिहास के बांधने वाले विवरण जैसे कहानी, जैसे नैतिक उदाहरण, जैसे विश्लेषण सभी प्रकार की व्यवस्थाओं में मिलते हैं। इतिहास में किन बातों को शामिल होना चाहिए इससे संबंधित सबसे अधिक सघन बहस अस्मिता के इतिहास और इस तर्क के दौरान सामने आती है कि कुछ खास ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी किसी व्यक्ति को शिक्षित व्यक्ति के रूप में चिह्नित करती है। कुछ लोग यह महसूस करते हैं कि अच्छा नागरिक बनने के लिए शिक्षार्थियों को अमेरिकी संविधान की भूमिका का पाठ याद होना चाहिए या थॉमस ऐडिसन को पहचानने में समर्थ होना चाहिए- हालांकि अनेक इतिहासकार तथ्यों की अनावश्यक लंबी फेहरिश्त को याद करने से असहमति जताएंगे। इसी तरह अनेक स्त्रीवादी इतिहासकार इतिहास को अपने संघर्ष के अंग के रूप में इस्तेमाल के लिए उत्सुक नजर आएंगी, वे यह सुनिश्चित करना चाहेंगी कि शिक्षार्थियों को अतीत की प्रमुख स्त्रीवादी नेताओं जैसे सुसेन बी. एंथनी आदि के बारे में जानकारी हो। संभावित सर्वेक्षणों की व्यापकता और याद रखने के कामों की संख्या काफी ज्यादा होती है- यही वजह है कि इतिहास के पाठ प्रायः काफी लंबे होते हैं।

इतिहास को सीखने-सिखाने में तथ्यों को समाहित करने और मस्तिष्क की इतिहास संबंधी आदतों के विकास के बीच एक आधारभूत द्वंद्व है। चूंकि इतिहास स्वयं हमारे जीवन और समय की तात्कालिक पृष्ठभूमि उपलब्ध कराता है, इसलिए उन ताकतों के बारे में जानना बेहद जरूरी है जिनका अतीत में उद्भव हुआ और जो आज के आधुनिक जगत को भी प्रभावित करती हैं। इस तरह के ज्ञान के लिए राष्ट्र की संस्था और उसकी प्रवृत्तियों के विकास को समझने पर ध्यान दिए जाने की जरूरत है। इसके लिए व्यापक संसार में सक्रिय प्रमुख ताकतों के बारे में इतिहास की दृष्टि से कुछ समझ का होना भी अपेक्षित होता है। उदाहरण के लिए, ईसाइयत और इस्लाम के बीच मौजूदा तनाव को समझने के लिए 12 सौ वर्ष पूर्व हुए घटनाक्रमों की प्रकृति को भी समझने की जरूरत है। वास्तव में विश्वव्यापी महत्त्व के मुद्दों के बारे में जानने की जरूरत ही वह आधारभूत कारण है जो अमेरिका के पाठ्यक्रमों में इतिहास के ज्यादा से ज्यादा जड़ें जमाते जाने के मूल में निहित है। जब हम ऐतिहासिक विकासक्रम में पाई जाने वाली विभिन्न परिपाटियों, जैसे कि अन्य राष्ट्रीय परम्पराओं या सभ्यताओं, के बीच तुलना करना सीखते हैं तो दिमाग की ऐतिहासिक आदतें समृद्ध होती हैं।

हालांकि दिमाग की ऐतिहासिक आदतों के विकास का मूल मंत्र ऐतिहासिक छानबीन के अनुभव के दोहराव में निहित है। इस तरह के अनुभव के लिए विविध प्रकार की सामग्रियों और विश्लेषण परक समस्याओं की विविधता होनी चाहिए। इस प्रक्रिया में तथ्य महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि ऐतिहासिक विश्लेषण आंकड़ों पर निर्भर करता है, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह तथ्य स्थानीय, राष्ट्रीय या विश्व इतिहास से लिए गए हैं- हालांकि अधिकाधिक व्यवस्थाओं के बारे में पढ़ना सबसे ज्यादा उपयोगी होता है। जिस बात का फर्क पड़ता है वह यह कि विभिन्न तीव्रता वाले बदलावों, परस्पर विरोधी व्याख्याओं वाले विभिन्न उदाहरणों और अनेक प्रकार के साक्ष्यों का आकलन कैसे किया जाता है। उत्तरोत्तर जटिल होती जाने वाली गतिविधियों के जरिए आधारभूत चिन्तन की आदतों के दोहराव की क्षमता का विकास आवश्यक है। विशिष्ट पाठ्यक्रमों के लिए जिन ऐतिहासिक प्रक्रियाओं और संस्थाओं को खासतौर से महत्त्वपूर्ण माना गया है, उनका उपयोग ऐतिहासिक जांच-पड़ताल को सिखाने में किया जा सकता है। दिमाग की इतिहास परक चिन्तन की आदतों की जरूरत को ढंके बिना तथ्यात्मक ज्ञान पर जोरे देते हुए सही संतुलन को बनाए रखना ही स्वाभाविक लक्ष्य है।

ऐतिहासिक छानबीन के दौरान विशिष्ट महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रकरणों और अनुभवों के बारे में जानकारी इतिहास के अध्ययन के किसी भी कार्यक्रम के लिए आवश्यक है, लेकिन उन्हें कुछ अनुपूरकों की भी आवश्यकता होती है। कोई भी कार्यक्रम पूर्णतः सुचारू नहीं हो सकता यदि उसमें कुछ अस्पष्टताओं या व्यक्तिगत अभिरुचियों की छूट न हो। सामन्यतः किसी को ज्यादा आकर्षित करती हैं इसलिए किसी खास तरह की समस्याओं या कहानियों को चुनना एक समग्र बौद्धिक जीवन को बनाने में मददगार होती हैं। इसी तरह इतिहास में कोई भी कार्यक्रम तब तक पूरा नहीं होता जब तक कि वह अतीत के बारे में हमारे ज्ञान और उसके साथ मानवीय और सामाजिक व्यवहारों, के विस्तार में वर्तमान में जारी ऐतिहासिक छानबीन की भूमिका के बारे में कोई समझ बनाने में मदद न करता हो। बीते दो दशकों में मानवीय व्यवहार के एक अतिरिक्त पहलू के रूप में, ऐतिहासिक सूचनाओं और विश्लेषणों का स्वाभाविक विस्फोट देखने में आया है, जिसे लेकर काफी शोध और विश्लेषण हुए हैं। और इस बात के अनेक प्रमाण मौजूद हैं कि इतिहासकार अतीत के बारे में हमारी समझ के विस्तार के लिए निरंतर हर संभव प्रयास कर रहे हैं। स्पष्ट है कि इतिहास का अनुशासन महज स्थापित आंकड़ों और जानी पहचानी कहानियों का दोहराव भरा प्रस्तुतिकरण मात्र नहीं है बल्कि यह नवाचारों का स्रोत है।

इतिहास क्यों पढ़ें ? जवाब यह है कि हमें वास्तव में मानवीय अनुभव की प्रयोगशाला तक पहुंच बनानी ही चाहिए। जब हम इसे ठीक ढंग से पढ़ते हैं और इस तरह दिमाग की कुछ उपयोगी ऐतिहासिक आदतें विकसित कर लेते हैं, और उनके साथ ही साथ हमारे जीवन को प्रभावित करने वाली ताकतों के बारे में कुछ आंकड़ें भी जुटा लेते हैं, तब हम जागरूक नागरिक, आलोचनात्मक चिन्तन और सामान्य जागरूकता से संबंधित कुछ सामयिक क्षमताएं और कौशल

अर्जित कर लेते हैं। इतिहास के उपयोग विविध हैं। इतिहास का अध्ययन हमें वास्तव में कुछ ''फायदेमंद'' क्षमताएं प्रदान करता है, किंतु इसके अध्ययन को संकीर्ण उपयोगितावाद तक सीमित भी नहीं कर दिया जाना चाहिए। कुछ इतिहास- जो परिवर्तनों के बारे में व्यक्तिगत स्मृतियों और तात्कालिक वातावरण के साथ निरंतरता से जुड़ा होता है- बचपन की सीमाओं के परे काम करने में भी उपयोगी होता है। कुछ इतिहास जो व्यक्तिगत आस्वाद पर निर्भर करता है, जहां किसी को सौंदर्य महसूस होता है, खोज का आनंद प्राप्त होता है या बौद्धिक चुनौती मिलती है। इतिहास अनिवार्य न्यूनतम और गहरी प्रतिबद्धता से उपजे आनंद के बीच में आता है, जो छुपे हुए मानवीय अतीत की व्याख्या की विकासमान क्षमता के माध्यम से संसार कैसे संचालित होता है इसकी वास्तविक समझ प्रदान करता है। ◆

भाषान्तर : देवयानी

समाज विज्ञान की समन्वित पाठ्यचर्या

बच्चों को सामाजिक विज्ञान पढ़ाने का उद्देश्य तो उनको अपने परिवेश को समझने में मदद करना होता है, जिसमें उन मानवीय रिश्तों, कुछ मूल्यों और प्रवृत्तियों की समझ शामिल होती है जो समुदाय, राज्य, देश और विश्व में उनकी बुद्धिमत्तापूर्ण भूमिका के लिए जरूरी हैं। भारत में बेहतर नागरिकता और भावनात्मक जुड़ाव के लिए सामाजिक अध्ययन के एक प्रभावी कार्यक्रम की दरकार है। सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम को कई तरह से व्यवस्थित किया जा सकता है। एक, समेकित नजरिए से जिसमें इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और नागरिक शास्त्र के ज्ञान और कौशलों को समन्वित करके देखा जाता है और दूसरे, परम्परागत नजरिए से जिसमें इन विषयों को अलग-अलग अनुशासनों के रूप में देखा जाता है। एक संतुलित स्कूली शिक्षाक्रम में इन दोनों की अपनी-अपनी जगह है।

शुरुआती प्राथमिक स्तर पर समन्वित नजरिए की जरूरत है। बच्चों को इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र की विभिन्न और विच्छिन्न जानकारियां देने के बजाए उसको मानव और उसके आस-पास के परिवेश पर केन्द्रित एक व्यवस्थित और समन्वित कार्यक्रम देना ज्यादा कारगर होगा। प्राथमिक स्तर की बड़ी कक्षाओं में सामाजिक अध्ययन की सामग्री को एक समग्र रूप से व्यवस्थित कर सकते हैं जिसमें किन्हीं निश्चित मुद्दों पर जोर दिया गया हो, लेकिन शिक्षार्थियों को इस बात के लिए भी तैयार किया जाए कि वे विभिन्न विषयों के बारे अपनी एक समझ बनाएं। क्योंकि आगे माध्यमिक स्कूल के स्तर पर ये विषय अलग-अलग अनुशासनों के रूप में पढ़े जाएंगे और इसी से उच्च माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञानों के रूप में इन विषयों में विशेष अध्ययन कराने का आधार तैयार होगा।

पूरी स्कूली शिक्षा के दौरान बच्चों की आयु और उनकी समझ को ध्यान में रखते हुए सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय और मानव मात्र की एकता पर जोर दिया जाए। उन इतिहास पुरुषों की कहानियों को प्राथमिक स्तर के बच्चों के पाठ्यक्रम में जगह मिलनी चाहिए जिन्होंने मानव मात्र के जीवन को बेहतर बनाने में अपना योगदान दिया। लेकिन यहां भारत की महान विभूतियों को जगह मिलनी चाहिए। माध्यमिक स्तर पर, जहां तक संभव हो सके, दुनिया के इतिहास के संदर्भ में भारत का इतिहास पढ़ाया जाना चाहिए। कुछ प्रासंगिक स्थानों पर विश्व की विभिन्न संस्कृतियों और सामजिक विकास की कुछ खास चीजों के बारे में भी बताया जाना चाहिए।...

भूगोल पढ़ाते समय भी जोर उन चीजों पर दिया जाना चाहिए जो चीजों की एकता दर्शाती हों। न कि उन चीजों पर भेद पैदा करें। और इसमें एक विश्व की समझ को भी बल दिया जाना चाहिए। इतिहास और भूगोल दोनों ही विषयों में विभिन्न देशों के न केवल राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पहलुओं के बारे में पढ़ाया जाना चाहिए, बल्कि विभिन्न देशों और समुदायों के बीच के संवादों और सहयोग के बारे में भी बताया जाना चाहिए।

(शिक्षा और राष्ट्र विकास, कोठारी आयोग 1964-66 के प्रतिवेदन से अंश)